Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

पुन्नीसिंह की कहानियों और उपन्यासों में चेतना

डॉ. शैलेन्द्र सिंह
सागर विश्वविद्यालय.

Abstract

साहित्य समाज का दर्पण होता है। डॉ0 पुन्नी सिंह का साहित्य उन दबे, कुचले, पिछड़े आदिवासी समाज की कहानी है जो उन्नति और विकास की किरणों से पूर्णतः ओझल रहे। मध्य प्रदेश में गुना, शिवपुरी, मुरैना और राजस्थान के बारा–शाहपुर क्षेत्र के धने–बेघने जंगलों में, नदी घाटी में बसे हुए सहारिया जनजाति के जीवन को रेखांकित किया गया है।

आदिवासी समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, आमोद–प्रमोद, धार्मिक भावना आदिभावों को उपन्यास और कहानियों में प्रदर्शित किया गया है। उनकी अपनी भाषा का प्रवाह तथा जीवन्त प्रस्तुति रचनाओं में विखरी पडी है।

Key word : डॉ. पुन्नीसिंह के साहित्य में चेतना.

प्रस्तावनाः

पुन्नीसिंह की कहानियाँ, आदिवासी समाज की पहिचान हैं। हिन्दी साहित्य में डॉ0 पुन्नी सिंह की कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान है। मुंशी प्रेमचन्द्र की कहानियों के बाद इनकी कहानियों को पढ़कर पाठक को समाज में परिवर्तन की दिशा में सोचने को मजबूर होना पड़ता है।

डॉ0 पुन्नीसिंह की कहानियों का तथ्य अनुसंधान परक है। जिसमें भाषा और शिल्प का कोई आडम्बर नहीं है। कहानी जहाँ से शुरू होती है और जहाँ उसका अन्त होता है, वह पूरी तरह से टंकारती हुई सुनाई देती है। कहानियों में सामाजिक संघर्ष के नवीन भाव का समावेश मजबूती से हुआ है। आदिवासी समाज के असीम संघर्ष, अनगिनत असफलतायें भ्रष्टाचार आदि कहानियों में बुनी और गुंथी गई हैं।

सभी कहानियाँ जीवन्त है। डॉ0 साहब की कहानियों में सामाजिक कुरीतियों, पुलिस उत्पीड़न, जाति विशेष नशाखोरी आदि सामाजिक बुराइयों का समावेश मिलता है।

1. सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ चेतना –

सामाजिक रूप से आदिवासी समाज में जातीय विद्वेय, भ्रष्टाचार, यौन शोषण आदि सामाजिक बुराइयों पर अपनी लेखनी के माध्यम से समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है।

जातीय विद्वेष का प्रभाव काफिर तोता कहानी संग्रह की ''पंचायत'' कहानी में स्पष्ट होता है।

''स्कूल के फर्श की मुंडेर पर गाँव के दलित बैटे हैं। सभी नीचे को गर्दन झुकाये उदास बैठे हैं। इनमें से अगर किसी के पास वाणी है तो वह है चतुरी का लड़का चौखा, हाईस्कूल में पढ़ता है इसलिये बेटा बढ़–चढ़कर बातें करता है। किसी चौधरी के पल्ले नहीं पड़ा है, सारी पढ़ाई एक ओर धरी रहेगी। उसको क्या मालूम है, कि चौधरी का लट्ठ या तो चौधरी झेलता है या फिर भैंसा''।[1]

इस कहानी में डॉ0 पुन्नी सिंह ने सामाजिक असमानता का प्रभावी चित्रण किया है। पंचायत में एक तरफ चौधरी लोग हैं और दूसरी तरफ दलित वर्ग है। गाँव की पंचायत में दलित वर्ग सही बात को कहने का साहस नहीं कर पाते हैं। हाईस्कूल में पढ़ने वाला नवयुवक कुछ कहने की कोशिश करता है तो उसको भी अपने प्रभाव से दबा दिया जाता है।

पंचायत कहानी में पंच परमेश्वर भी प्रभावशाली पटेल

लोगों का समर्थन करते हैं। उनका विरोध करने का साहस कोई नहीं जुटा पाता है। पंचायत में बात प्रधान से ही शुरू होना जरूरी है।

''हाकिम सिंह प्रधान ने बात शुरू की – देख हीरा ! तेरी घर वाली तो मर गई, चाहे यों कहो कि चौधरी के लड़के से मर गई यो समझो कि मौत से मर गई, अब तू धीरज से काम ले, पुलिस थाना जायेगा रपोट–अपोट करेगा तो बेकार में और परेशानी मोल लेगा। थानेदार आयेगा, तो तुझी को और मुंसेगा।''[2]

इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से चौधरी वर्ग के प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है। इसके बाद पंचों का निष्कर्ष सुनाया जाता है।

''भैया चार पंचों की बात मान हम यहाँ पंच फैसला लिखवा देते हैं। और तूँ अपनी औरत का जाकर ठीक से क्रिया–कर्म कर रही बात चौधरी की तो उनसे तुझको पच्चीस पचार रूपया क्रिया कर्म के लिये दिलायेंगे।''[3]

प्रस्तुत गद्यखण्ड पंचायत की न्याय व्यवस्था की पोल खोलते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में लोगों का पंचायत के न्याय पर बहुत विश्वास रहता है।

''इस गाँव में हर मर्ज कीदवा सिर्फ एक है – पंचायत हर समझदार दूसरे को थाना, पुलिस कोर्ट, कचेहरी जाने से रोकता है और समझाता है कि वहाँ किसी प्रकार का न्याय नहीं मिलता उल्टे झमेले ही खड़े होते हैं।''

इस प्रकार के विश्वास से ही आदिवासी समाज को शोषण का शिकारे होना पड़ता है। दबे कुचले आदिवासी समुदाय तथा दलित वर्ग का पटेल और चौधरी वर्ग उत्पीड़न करते हैं। यह सामाजिक असमानता विभिन्न कहानियों में मिलती है।

डॉ0 पुन्नीसिह के कहानी संग्रह में प्रेमचन्द्र जी की कहानियों की तरह समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। 'नये जिनावर' कहानी में एक लड़की का शोषित वर्गो के प्रतिकार का वर्णन किया गया है।

''ठेगा। हर आदमी को ढेंगा। नये पटेल को ठेंगा, जंगल के साहब को ठेगा, ठेकेदार को ढेंगा। गजब दूरी है रे भाई ! हर किसी को ढेंगा दिखाती है। इस दूरी की सूरत जो भी देखता है वह दीवाना हो जाता है। जंगल में कितने साहब और कितने ठेकेदार उस पर दीवाने हैं, लेकिन वह किसी को भी घास नहीं डालती, वाहरी टूरी।''[5]

इसी प्रकार सामाजिक रूप से आदिवासी समाज को कदम कदम पर समस्याओं का सामना करना पड़ता है, यह समाज आर्थिक, सामाजिक, नैतिक अनेक मौंचों पर संघर्ष करता हुआ प्रतीत होता है यह वर्ग भी समाज में उसी सम्मान से रहना चाहता है जैसे दूसरे लोग रहते हैं।

''मंगलू ने अथाह गहरी साँस ली, ठीक आबनूश की लड़की, के रंग, जैसे हडियल शरीर को समेटा और बाहों के बीच रखनों को बाँधकर उसने घुटनों पर बेड़ी टिका दी और हिचकी जैसी लेकर बोला – बहुत हुआ रामेश्वर ! बहुत हो गया, अब यह सब नहीं सहा जाता है।''[6]

इस कहानी में आदिवासी समृद्धि के प्रतीक वनों को समाप्त करने का प्रयास उन्हीं लोगों द्वारा किया जाता है, जिनसे जंगल की रक्षा का दायित्व है जबकि इसका पूरा दोष आदिवासियों पर मढ़ा जाता है। आदिवासी जंगल की व्यवस्था का पूराध्यान रखते हैं। अधिकारी, नेता और ठेकेदार मिलकर इनका शोषण करते हैं।

महँगाई तथा भ्रष्टाचार की सामाजिक विकृति का वर्णन डॉ0 पुन्नीसिंह ने ''कहानी व्यवस्था की'' में किया है।

''पहले सवा रूपये का ही प्रसार चढ़ता था। अब बढ़ते–2 सवा ग्यारह रूपये का हो गया है, आगे और भी बढ़ सकता है उसमें महावीर का क्या दोष है ? महँगाई भी इतनी तेजी से बढ़ रही है। सीतापुर वाली एक साल से दिमाग खाये जा रही है कि महावीर जी की मूर्ति के चारों ओर परकोरा खिचाकर छतरी लगवानी है। अबकी बार मैंने तय कर रखा है कि महावीर जी कोई इस–बीस हजार वाला केस फँसायें तो उनके ऊपर छतरी की व्यवस्था कर दूँ।''[7]

सामाजिक शोषण की आवाज डॉ0 पुन्नीसिंह के साहित्य में विभिन्न स्तरों पर दिखाई देती है। 'लकड़हारे की राखी' कहानी में यौन शोषण का वर्णन है।

''झोपड़ी के बाहर दीदी नहीं दिखी तो मैंने झोपड़ी के अन्दर झांका वहाँ बूढ़ा हवलदार लेटा था मुझे देखकर वह लड़खड़ज्ञकर उठ खड़ा हुआ। हवलदार दुग दबाकर भागना ही चाहता था तभी मैं उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और बोला किसी गरीब के घर में सेंध लगाते हुये तुम्हें शर्म नहीं आती है।''[8]

इस प्रकार इस कहानी में पुन्नीसिंह जी ने पुलिस वर्ग के द्वारा भी आदिवासी समाज का विभिन्न स्तरों पर शोषण किये जाने का वर्णन किया गया है। नैतिक मूल्यों का पतन इस कहानी में स्पष्ट रूप से द्रष्टिगोचर होता है।

2. शासकीय तंत्र के खिलाफ चेतना –

डॉ0 पुन्नीसिंह ने अपनी कहानियों में कर्मचारियों तथा उस सम्पूर्ण तन्त्र के खिलाफ आदविवासियों, ग्रामीणों के संघर्ष को प्रमुख विषय बनाया है। पंचायत कहानी में इसका वर्णन हुआ है।

''लोगों ने अपनी आँखों से देखा है चोरी हुई और कोई पुलिस में गया तो पुलिस उसी को मार–मारकर चोरी करने वाले का नाम पूँछती है। सही–2 ना मालूम हो तो अनुमान से ही बता देने को कहती है, कहीं केस कचहरी में गया तो जितना माल चोरी नहीं हुआ उससे ज्यादा वकील, मुख्तार, दलाली और रिश्वत के लिए रखो। उस पर भी कभी–2 चोरी करने वाला बाहर और जिसका माल गया हो वह जेल के अन्दर, वाह रे न्याय''[9] !

वन विभाग के कर्मचारी, पुलिस कर्मचारी आदिवासी गाँवों में जाकर उनका उत्पीड़न करने का प्रयास करते हैं, लेकिन आदिवासी समाज उनका कड़ा प्रतिकार करता है। 'कंसक' कहानी में भी दरोगा जी की तानाशाही प्रदर्शित होती है।

''सामने बन्नू को खड़ा देखकर दरोगा का खून खौल उठा वे उसकी ओर लपके – साले ! आज तुझे जीवित नहीं छोडूँगा, हरामी की औलाद साला शराब पीकर रिक्शा चलाता है, नहीं साब ! मैंने शराब नहीं पी है। दरोगा का पारा और अधिक गर्म हो गया। वे क्रोध से फुफकारते हुये पैर का जूता उतारने लगे तभी बन्नू थोड़ा आगे बढ़कर उनके सामने तनकर खड़ा हो गया और बोला–दरोगा जी, इस अँधेरी

रात में हाथ उठाने की कोशिश मत करना। अभी तो मैं तुमसे भारी पड़ूँगा''[10]

इस प्रकार आदिवासी समाज शोषक व्यवस्था से पूरी ताकत से संघर्ष करता है और अपने अधिकारों के लिये तनकर खड़ा हो जाता है।

जंगल के ठेकेदार वन दरोगा आदि से मिलकर उनका उत्पीड़न करने का प्रयास करते हैं। ''वाह री टूरी, तेरा ये दिमाग। जंगल के ठेकेदारों का बिल्कुल खौफ नहीं। जिस जंगल में सरई–बीजा बटोरने जाती है वह जंगल तेरे बाप का है। वह जंगल ठेकेदार का है, फारेस्ट कर्मचारियों का है, ये चाहें तो एक बीजा नहीं उठाने देंगे।''[11]

इस कहानी में डॉ0 पुन्नीसिंह ने यह प्रदर्शित किया है, कि फारेस्ट गार्ड तथा पटवारी आदि सरकारी कर्मचारी कमीशन देकर खुद जंगल का सफाया करवाते हैं और गरीब और आदिवासियों का शोषण करते हैं।

जंगल का कोढ़ कहानी में मुगिया समझने में असमर्थ भी आज उसके आदमी को हुआ क्या है ? वह पुलिस से, पटवारी से, जंगल के साहब से और कितने लोगों से कितनी बार पिटा है पर ऐसे मुँह लटका कर तो कभी नहीं बैठा यह कोई नई बात तो नहीं है, यहाँ सभी पिटते हैं, मार खाने पर रोते भी हैं। शरीर पर हल्दी का लेप करते हैं। हँसते हैं और दादरिया गाते हैं, यही यहाँ की जिन्दगी है।

''फारेस्ट गार्ड ने मंगतू के ठीक सामने अपनी साइकिल खड़ी कर दी और साइकिल के कैरियर में लगे डंडे को निकाल कर उस ओर बढ़ा। उसने मंगलू के कँधे पर रखी टंगिया खींचकर दूर फेंक दी और बोला–साले चोर रोज–2 पत्ते तोड़कर ले जाता है। तभी पटवारी ने फारेस्ट गार्ड को कहा–मारो साले को। बैगा के हाथ पैर तोड़ दो। यह साले जंगल के दुश्मन है।''[12]

3. स्त्री चेतना –

डॉ0 पुन्नीसिंह की कहानियों में स्त्री को संघर्ष तथा विश्वास का प्रतीक प्रदर्शित किया गया है। 'पंचायत' कहानी में स्त्री पात्र झुनिया निडर होकर चौधरी वर्ग का विरोध करती है।

''झुनिया ने खेत में जाकर चौधरी के बड़े लड़के को रोकना चाहा। उसने झुनिया को गालियाँ देकर दुत्कारा फिर भी वह उससे भिड़ी रही और खेत में हो रहे कब्जे को संघर्ष करके रोका।''[13]

पुन्नी सिंह जी की चर्चित कहानी ''इस इलाके की सबसे कीमती औरत'' में यह बताया गया है कि इतने विकास के बावजूद आज कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ औरतों की बोली लगती है। इस कहानी की मुख्य पात्र रामकली थी उसे एक लाख में बेचा गया था। उसे सनकुँआ के जंगल में बेचा गया था। झुनियाँ जैसी महिलायें पटेल तथा जमींदार वर्ग के शोषण तथा दूषित मानसिकता का कड़ा प्रतिकार करती हैं। आदिवासियों की जमीन पर कब्जा करने के लिये यह वर्ग नई–2 चालें चलता रहता है।

स्त्री पात्रों ने ना केवल शोषण का प्रतिकार किया है बल्कि अनेक बार अपनी गहरी समझबूझ, और बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया है सुतिया कहानी में इसका वर्णन है।

''रमिया भीखू से कहती है – तब ले सुन । देख बद्री सेठ ने तेरे अकेले का घर नहीं उजाड़ा है, तेरे जैसे सैकड़ों का घर उजाड़ा है। उनमें से एक मैं भी हूँ। अगर हम सब बद्री सेठ के खिलाफ लड़ें तो काई सूरत नहीं कि वह इस गाँव में रह सके और हमारी जमीन–जायदाद हमें ना मिल सके।''[14]

इस कहानी में आदिवासी वर्ग की महिलायें बौद्धिक क्षमता को प्रदर्शित करती हैं।

4. पुन्नीसिंह के उपन्यासों में चेतना –

डॉ0 पुन्नी सिंह के उपन्यासों में पात्रों का संघर्ष विभिन्न सामाजिक बुराइयों के खिलाफ दिखाई देता है। डॉ0 पुन्नीसिंह के उपन्यास सहराना, पाथर घाटी के शोर में शासकीय तन्त्र के खिलाफ चेतना के आयाम प्रदर्शित होते है।

सहराना उपन्यास में आदिवासी जीवन तथा प्राकृतिक आयामों का बसूबी वर्णन किया गया है, ''वह जिस जगह पर बैठा है, वही जंगल ज्यादा घना है। खैर और करदई के पड़े छितराये हुये खड़े हैं। आज उसे शायद पहली बार ही अनुभव हुआ है, कि रात के समय खैर का जंगल कत्थई रंग से गंध से कैसा भीग जाता है। इस गंध में एक अजीब तरह की मस्ती है।''

5. साँस्कृतिक चेतना –

आदिवासी समाज प्रसन्नता के समय नाच–गाकर अपनी साँस्कृतिक चेतना का परिचय देता है। सहारिया जनजाति के लोग शिवपुरी तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में निवास करते है। इस समाज के लोगों का रहन सहन वेश भूषा, शिक्षा आदि का प्रभाव विभिन्न स्तरों पर दिखायी देता है। सहराना में एक लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है।

बोल गयो पपीहा, ओ हो बोल गयो।
बोल गयो पपीहा, आहा बोल गया।।
बोल गयो पपीहा, तैंने जे का कियो ?
बोल गयो पपीहा, ओ हा बोल गये।
आहा–ओहो आहा–ओहा..... ।[15]

विकास और चेतना के स्तर पर सहारिया समाज जाग्रत रहता है। नये सहराने में अंजनी काकी का बड़ा मान–सम्मान है। सहारिया समाज अब आदिय समाज नहीं रहा। सहराना में अनेक स्त्री पात्रों की भूमिका विभिन्न रूपों में दिखायी देती है। तो वे खुश हो जाते हैं। सोभा के बारे में सोचकर उसका सीना तन गया। सच में छोकरा बहुत मेहनती निकला। अंजनी काकी छुड़कती नहीं तो सेठ से जमीन मिलना मुश्किल था। इसी जीवन पर खेती के कारण सहराने के आस–पास ऐसी फसल देखी गयी थी।

6. स्त्री चेतना – सहराने की सभी आयु वर्ग की औरतों में अंजनी काकी का काकी रौब था। वह जिसको चाहे अपने घर का काम करने को बुला सकती है। जिसको वह बुलाती है वह खुशी–2 उसके यहाँ काम कर जाती है उनके बीच के वार्तालाप का कुछ अंश प्रस्तुत है।

''अंजनी काकी सोभा के चेहरे पर नजरे गड़ाकर देखती रही वह फिर बोली क्यों सोभा मेरी बात सुन रहो है। गोरस से तेओं मामा आवे बाओ है। फिर सोभा बोला मैं गोरस की मोड़ी ते ब्याह नहीं करूँगों। गोरस बारी मोड़ी ते ब्याह नही करैगो तो कौन सी मोड़ी तें करैगो ?[16]

ये आपसकी नोंक–झोंक स्थाई बुराई के कारण नहीं बनते हैं। आदिवासी समाज में आपसी मान मर्यादा का काकी महत्व रहता है।

7. सामाजिक चेतना – सहराना उपन्यास में सामाजिक लोक–लाज का प्रभाव दिखायी देता है। सहराना में चोरी की घटना हड़कम्प पैदा कर देती है।

''गोविन्द पटेल के खेत से मूँगफली चुरा ली गई। नदी किनारे पीपल वाले दस बीधा में एक दिन पहले सहारियों के द्वारा खोदी गई मूँगफली पूरी की पूरी जमा थी। सुबह उठते ही पटेल ने सुना तो उनके तलबों के नीचे जमीन खिसक गई।''

सहारिया समाज की ईमानदारी पर भी कोई सबाल नहीं उठा सकता है। सहारिया भूखों मर जायेगा, लेकिन किसी की चीज में हाथ नहीं लगायेगा।

मास्टर से भागवत ना कराने के कारण वह गोविन्द पटेल से सहारिया आदिवासियों की रिपोर्ट थाने में लिखाने के लिये कहते हैं लेकिन पटेल समझ जाते है। कि मिश्री लाल मास्टर उनके कन्धे पर बंदूक रखकर आदिवासियों का शोषण कराना चाहते है।

सहराना उपन्यास में यह बदहाली का स्वरूप दिखायी देता है कि किस तरह आदिवासी समुदाय के लोग राजनैतिक नेताओं से तरह–2 की आशा लगाते हैं लेकिन भ्रष्टाचार तथा भाई भतीजावाद के कारण उनकी आशायें धूर्मिल हो जाती है, तथा विकास के कार्य अवरूद्ध हो जाते हैं।

पाथर घाटी के शोर उपन्यास में भी पत्थर खदानों में कार्य करने वाले मजदूरों के जीवन को प्रतिबिम्बित किया गया है।

संदर्भ –

1. पंचायत कहानी पृ0सं0 9,10
2. कहानी पृ0सं0 16,17
3. कहानी पृ0सं0 19,20
4. नये जिनावर पृ0सं0 9,10,11
5. कहानी व्यवस्था की पृ0सं0 15,16
6. जंगल का कोढ़ पृ0सं0 18,19
7. लकड़हारे की राखी पृ0सं0 10,11
8. कंसक कहानी पृ0सं0 20,21
9. जंगल का कोढ़ पृ0सं0 23,24
10. पंचायत कहानी पृ0सं0 14,15
11. सहराना पृ0सं0 27,28
12. वही पृ0सं0 16,17
13. वही पृ0सं0 13,14
14. वही पृ0सं0 11,12
15. वही पृ0सं0 35,36
16. वही पृ0सं0 32,33

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com